

विचार बिन्दु

हर चीज़ बदलती है, नष्ट कोई चीज़ नहीं होती। -अरविन्द घोस

स्वाइन फ्लू से बचाव करने में प्रमाण-आधारित आयुर्वेद पूर्णतः सक्षम है

दे श भर में स्वाइन फ्लू एक बड़ी समस्या बनकर उभरा है। हालाँकि इस विषय पर यहाँ पूर्व में चर्चा की गयी है, तथापि कुछ नई जानकारी के उपलब्ध होने और समस्या की विकारलता के कारण आज की चर्चा पुनः स्वाइन फ्लू से बचाव के प्रमाण-आधारित सुझावों पर केन्द्रित है। सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि वर्तमान में दो प्रकार के एन्फ्लुएंजा-ए और दो प्रकार के एन्फ्लुएंजा-बी वायरस स्वाइन फ्लू का कारण हैं। एन्फ्लुएंजा-ए वायरस के 16 उप-प्रकार हैं। इनमें 14 प्रकार पक्षियों में तथा दो प्रकार चमगादड़ों के शरीर में पाये जाते हैं। एन्फ्लुएंजा-बी में छः उप-प्रकार ऐसे हैं जो मानव को संक्रमित करते हैं। स्वाइन फ्लू से बचाव के लिये वैक्सीनेशन महत्वपूर्ण उपाय माना जाता है, परन्तु वैक्सीन उत्पादन के विज्ञान में लम्बे समय से कोई ठोस परिवर्तन नहीं हुआ। अधिक उम्र में वैक्सीन की प्रभाविता भी ठीक नहीं मिली है। इसके अलावा, वैक्सीनेशन न केवल हर वर्ष जरूरी है, ऐसी कोई एकल वैक्सीन उपलब्ध नहीं है जो सभी प्रकार के वायरल संक्रमणों के विरुद्ध प्रभावी हो। जहाँ तक औषधियों का प्रश्न है, एन्फ्लुएंजा के उपचार हेतु अभी केवल एन्टीविरासल और औषधियों ही उपयोगी हैं। पालीमेरेज मैकेनिज्म वाली औषधियाँ अभी विकसित नहीं हो पाई हैं। और असल पचड़ा यह भी है कि एन्फ्लुएंजा के नये-नये रूपांतर या वैरिएंट समस्या को जटिल बना देते हैं।

एन्फ्लुएंजा वायरस का संक्रमण छींकने, खाँसने, या संक्रमित सतहों व वस्तुओं को छूने से फैलता है। एक व्यक्ति कई बार संक्रमित हो सकता है। टाइप-ए एन्फ्लुएंजा वायरस असल में सुअर-जन्य वायरस का एक उप-प्रकार, ए (एच1एन1) है। इसके कारण वर्ष 2009 में स्वाइन फ्लू महामारी फैली। अब यह मौसमी एन्फ्लुएंजा के रूप में संक्रमित फैलता है। सबसे पहले यह मैक्सिको के सीमांत क्षेत्र में पाया गया था, जो दो माह के भीतर 21वीं सदी की पहली महामारी बन गया था।

बीमार होने के बाद उपचार तो पृथक विषय है, परन्तु आज पुनः प्रश्न यह है कि क्या आयुर्वेद की मदद से स्वाइन फ्लू वायरस से बचा जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर समझने के लिये यह जानना आवश्यक है कि कुछ लोग वायरस की चपेट में क्यों आ जाते हैं जबकि अन्य लोग बचे रहते हैं। आयुर्वेद की दृष्टि में इस प्रश्न का उत्तर बीज-भूमि का सिद्धांत और व्याधिषमत्व का सिद्धांत द्वारा स्पष्ट होता है। बीज-भूमि का सिद्धांत स्पष्ट करता है कि जब शरीर उपजाऊ होता है या कहिये कि सम्यक पाचन न होने के कारण जमा हुये आम जैसे विषाक्त पदार्थों के कारण, या पूर्व से ही अन्य रोगों से प्रसिद्ध होने के कारण, प्रतिरक्षा तंत्र या व्याधिषमत्व कमजोर हो जाता है, तब बीज अर्थात् वायरस का संक्रमण होते ही आसानी से शरीर को कोशिकाओं में बढ़ने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत जब शरीर आम-रहित होने से व्याधिषमत्व मजबूत रहता है, तो बीज अंकुरित नहीं होते या वायरल संक्रमण होने के बावजूद बीमारी शरीर में आगे नहीं बढ़ती। इसके साथ ही, यदि शरीर में जटारिण सम है तो भोजन के सम्यक पाचन से अंततः बनने वाला ओजस शरीर को संक्रमण से लड़ने में मदद करता है। भौतिक स्तर पर ओजस की कमी का तात्पर्य प्रतिरक्षा-शक्ति या व्याधिषमत्व की कमी है। मानसिक स्तर पर ओजस की कमी का तात्पर्य मानसिक शक्ति की कमी और अल्पसत्त्व की स्थिति है। इस प्रकार यदि शरीर में रोग-प्रतिरक्षा-शक्ति या व्याधिषमत्व दुर्बल बनाये रखा जाये तो वायरल संक्रमण की स्थिति के बावजूद शरीर में स्वाइन फ्लू के कोई लक्षण या बीमारी उत्पन्न संभावना कम ही रहती है।

1. स्वाइन फ्लू से बचाव का पहला कदम मजबूत प्रतिरक्षा तंत्र है। ओजस को दुर्बल अवस्था में रखकर शरीर को प्रतिरक्षा-शक्तियों व्याधिषमत्व बढ़ाकर तमाम तरह के वायरल फीवर, स्वाइन फ्लू, इन्फ्लुएंजा जैसे सत्रिपातकारी संक्रमणों से बचा जा सकता है। यदि व्यक्ति को पाचन की आग सामान्य है-अर्थात् विषमामिनी है, अर्थात् न सुचला रही है (मन्दगिण), न चक्रवर्ती रही है (तीक्ष्णगिण)-तो शरीर की प्रतिरक्षा और व्याधिषमत्व उच्चकोटि का होने से कोई संक्रमण प्रभावी नहीं हो पाता है। ऋतुओं के संधिकाल में विशेषकर वर्षाऋतु और शरदऋतु जैसे मौसमों के दौरान, जब मौसमी एन्फ्लुएंजा वायरल संक्रमण की संभावना अधिक होती है, तब पहले से ही सम्यक ऋतुचर्या के द्वारा आहार-विहार, सद्दत, स्वस्थवृत्त, रसायन प्रयोग उपयोगी रहते हैं।

जहाँ तक आयुर्वेद का प्रश्न है, व्यक्तिगत स्तर पर आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से अणुतेल का नस्य और कालमेघ, तुलसी, गुडूची, शुंठी आदि प्रोफाइलैक्टिक औषधियों के प्रयोग से भी स्वाइन फ्लू से बचे रहना संभव है। शरीर में रोग-प्रतिरक्षा-शक्ति मजबूत होनी चाहिए।

2. स्वाइन फ्लू से बचाव का दूसरा कदम संक्रमण की संभावना को दूर करना है। महर्षि सुश्रुत द्वारा औपसर्गिक रोगों के सन्दर्भ में व्यक्ति-से-व्यक्ति के संक्रमण का सिद्धांत सभी वायरल इन्फेक्शन्स के लिये महत्वपूर्ण है (सु.नि.5.33-34)। यौन संपर्क, शरीर से संपर्क, हाथ मिलाना, छोटी बूंदों से संक्रमण, पहले से संक्रमित व्यक्ति के साथ भोजन करना, संक्रमित व्यक्ति के साथ बैठना या सोना, संक्रमित व्यक्तियों के कपड़े, सौंदर्य प्रसाधन और गहनों का उपयोग आदि से संक्रमण की आशंका रहती है। ऐसे संक्रामक या औपसर्गिक रोग, जैसे वायरल-फीवर, सुअर-जन्य, फुफुसीय तपेदिक, कर्जोकिटवाइटिस आदि एक व्यक्ति से दूसरे में व्यक्ति संचारी होते हैं। अतः संक्रमण काल में संक्रामक स्रोतों से दूरी बनाना आवश्यक है।

3. स्वाइन फ्लू से बचाव का तीसरा कदम सम्यक दिनचर्या, रात्रिचर्या और ऋतुचर्या का पालन है। इसके लिये नियमित नस्य लेना, व्यायाम, पैदल चलना, अभ्यंग, शरीर की सफाई, स्नान, साफ-सुधरे कपड़े पहनना, योग, प्राणायाम, और रात में सात घंटे की नींद आदि आवश्यक हैं। संक्रमण काल में अणुतेल का प्रतिमर्श नस्य अत्यंत आवश्यक है। इसके लिये सुबह-शाम साफ अँगुली में अणुतेल की कुछ बूँदें डालकर नासाछिद्र में लगाया चाहिये। भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में जाने के पूर्व भी नस्य लेना आवश्यक है। नस्य पर आज तक हुई शोध से यह स्पष्ट है कि यह साधारण सी लगाने वाली क्रिया असल में अत्यंत लाभकारी है। यह आरोग्य और दृढ़ता देती है। वायरस संक्रमण को निश्चित रूप से रोकती है।

4. स्वाइन फ्लू से बचाव का चौथा सुझाव यह है कि सद्दत और आचार रसायन का निरंतर पालन किया जाये। विशेषकर स्नान, मलमार्गों व हाथ की सफाई, संक्रमित वस्तुओं, व्यक्तियों व स्थलों से सुरक्षित दूरी रखना, जम्हाई, छींक व खाँसी के समय मुँह ढकना, नासिका-द्वारों को कुरेदना से बचना, सोने, जागने, मदिरापान, भोजन आदि में अतिवादी नहीं होना, स्नान के बाद पुनः पूर्व में पहने कपड़े नहीं पहनना, हाथ, पैर व मुँह धोये बिना भोजन नहीं करना, गंदे या संक्रमित बर्तनों में भोजन नहीं करना, संक्रमित व्यक्तियों द्वारा लाया हुआ भोजन नहीं करना चाहिए।

5. स्वाइन फ्लू से बचाव का अंतिम कदम प्रिवेंटिव रसायन और औषधियों का आयुर्वेदाचार्यों की सलाह के अनुसार प्रयोग करना है। प्रिवेंटिव औषधियों में कालमेघ, तुलसी, शुंठी, गुडूची प्रमुख हैं जो व्याधिषमत्व बढ़ाती हैं। आयुर्वेद की प्रोप्राइटी औषधियों जैसे कोल्डकैल और एलरकैल में कालमेघ, तुलसी, शुंठी, गुडूची उपलब्ध हैं। तथापि यदि ये औषधियाँ टेबलेट्स मिल पायें तो अपने आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से इन औषधियों का काढ़ा भी बनाकर लिया जा सकता है। इसके अलावा वायरल संक्रमण के परिप्रेक्ष्य में जिन औषधियों में आधुनिक वैज्ञानिक शोध हुई है, उनमें अश्वगंधा, शूण्ठी, कालीमिर्च, पिपप्ली, गुडूची, पुदीना, हल्दी, यष्टिमधु, विभीतकी, लहसुन, तुलसी, सहजन, चित्रक, कालमेघ, वासा, सप्तचक्र (सैलेसिया रेटीकुलाटा), दूधी (राइटिया टिक्टोरिया) का क्षीर, आदि प्रमुख हैं। शहतूत की नई टहनियों में पाया जाने वाला आक्सिसेवेराट्रॉल भी वाइरस रेप्लीकेशन को रोकता है। अश्वगंधा, कालमेघ आदि की न्यूरोमिनिडेज-इन्हिबिटर एक्टिविटी ठीक वैसी ही है जैसी कि आधुनिक औषधियों जानामिर्वि, ओसेल्टामिर्विरेव पेरांमिर्वि की है। आधुनिक औषधियों के प्रति रेजिस्टेंट वायरस स्ट्रेन विकसित होने की दशा में आयुर्वेद की औषधियाँ ही प्रभावी होती हैं। साथ ही आहार ऐसा हो जिससे जटारिण सदैव सम रहे एवं व्याधिषमत्व बढ़ा रहे। आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में कहें तो ऐसा आहार जो ऑक्सिडेंटिव स्ट्रेस लोड को कम से कम बढ़ाये, वही व्याधिषमत्व बढ़ा सकता है। रेसेवेराट्रॉल एवं ऑक्सिसेवेराट्रॉल युक्त खाद्य एवं पेय जैसे द्राक्षासव, ग्रीन-टी, द्राक्षा, अनार, संतरे व अनन्नास आदि बचाव में बड़ी भूमिका निभाते हैं क्योंकि इनमें एंटीऑक्सिडेंट व एंटीवायरल गुण पाये जाते हैं।

एक प्रश्न यहाँ महत्वपूर्ण है। जिन प्रिवेंटिव औषधियों-कालमेघ, तुलसी, शुंठी, गुडूची-आदि को उपयोगी माना जा रहा है उसका प्रमाण क्या है? इस विषय में इलाहबाद में आयुर्वेदपुरम के संस्थापक और विश्व-प्रसिद्ध शारसूत्र सर्जन डॉ. वी. बी. मिश्रा के नेतृत्व में एंटीबायोटिक दवाओं के उपयोग को कम करने के लिये सुरक्षित और प्रभावी विकल्प तलाशे जा रहे हैं। इसके साथ ही राजस्थान के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्यों डॉ. हरिओम शर्मा, डॉ. सुरेश अटल, डॉ. अम्बाशंकर दवे, डॉ. अनुपम दुबे, डॉ. कन्हैयालाल शर्मा, डॉ. योगेन्द्र शर्मा, डॉ. रेखा शर्मा, डॉ. अरुण तिवारी, डॉ. शैलेश निगम, डॉ. सी. बी. श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्यों डॉ. भागवत प्रसाद शुक्ल और उत्तर प्रदेश की डॉ. कालिका श्रीवास्तव का अनुभव भी उपयोगी है। चार आयुर्वेदिक औषधीय पौधों (कालमेघ, गुडूची, तुलसी, शुंठी) के डबल-मानकौकृत एक्सट्रैक्ट से निर्मित प्रोप्राइटी काष्ठौषधि कोल्डकैल व एलरकैल पर 55 विभिन्न एकल क्लिनिकल अनुभवों से ज्ञात होता है कि इन आयुर्वेदिक औषधियों को वायरल समस्यओं से बचाव में सफलतापूर्वक उपयोग संभव है। एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग करने वाले मरीजों की तुलना में कोल्डकैल व एलरकैल का उपयोग करने वाले मरीजों में खाँसी, गले की खरारा, और वायरल बुखार से पीड़ित रहने की अवधि लगभग आधी रह जाती है। उपचार के दौरान कोई ख़ास प्रतिकूल घटनायें या हानिकारक प्रभाव की सूचना भी मरीजों से नहीं प्राप्त हुई।

बायोमेडिकल चिकित्सा के अनुसार स्वाइन फ्लू से बचाव की विश्वसनीय विधि सालाना वैक्सीनेशन ही मानी जाती है। जहाँ तक आयुर्वेद का प्रश्न है, जैसा कि ऊपर वर्णित है, व्यक्तिगत स्तर पर आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से अणुतेल का नस्य और कालमेघ, तुलसी, गुडूची, शुंठी आदि प्रोफाइलैक्टिक औषधियों के प्रयोग से भी स्वाइन फ्लू से बचे रहना संभव है।

-अतिथि सम्पादक, डॉ. दीप नारायण पाण्डेय (इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी) (यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।)

ध्वजारोहण व पर्यटकों के डांस के साथ हुआ पुष्कर मेले का आगाज

पुष्कर/अजमेर, (कासं)। सांस्कृतिक छटा बिखरते हुए अंतर्राष्ट्रीय पुष्कर मेला शनिवार से विधिवत रूप से शुरू हुआ। आगामी 5 नवम्बर तक चलेगा। मेले के शुभारम्भ समारोह में परम्परागत विधि विधान के साथ पूजा अर्चना करके ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण के बाद अन्तर्राष्ट्रीय नगाड़ा वादक नाथूलाल सोलंकी के दल ने राजस्थानी लोक धुनों के साथ सुरीला नगाड़ा वादन किया। साथ ही जर्मनी की निना ने पोई डांस, वैनैजुएला के एलन ने कोंटेक बॉल डांस तथा रूस की सोनाटा ने परी नृत्य प्रस्तुत किया। विश्व प्रसिद्ध मेला का शुभारम्भ संसदीय सचिव सुरेश सिंह रावत एवं अजमेर एडीए अध्यक्ष शिवशंकर हेड़ा व संभागीय आयुक्त हरसहाय मीना व कलेक्टर गौरव गोयल, आई जी मालिनी अग्रवाल, पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र चौधरी एवं पालिका अध्यक्ष कमल पाठक ने झंडारोहण करके की। पूजा पंडित कैलाशनाथ ने सम्यन् कराई।

मेला समारोह में परम्परागत राजस्थानी वेशभूषा से सजी लगभग 200 बालिकाओं ने मंगल बेला के गान पर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत कर मंत्रमुग्ध कर दिया। डॉ. श्रृंगारक अशोक टॉक के दल ने मक्खली काफ़ीला का प्रदर्शन किया। जब पुलिस बैड की धुन के बीच राष्ट्रगान गाया व पुलिस के जवानों ने राष्ट्रीय ध्वज को सशत्रु सलामी दी।



पुष्कर मेले में विदेशी पर्यटकों ने राजस्थानी वेशभूषा पहनकर मेले का लुत्फ उठाया।

देशी और विदेशियों के बीच मेला मैदान में फुटबॉल मैच खेला गया। साथ ही इस अवसर पर मांडणा प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। फुटबॉल मैच में देशी टीम विदेशी मेहमानों की टीम पर भारी पड़ी और उन्हें 4-2 से हार का सामना करना पड़ा लेकिन हारने के बावजूद विदेशी पर्यटकों की खुशी देखते ही बन रही थी।

इस अवसर पर संसदीय सचिव सुरेश रावत ने कहा कि मेला हमारी संस्कृति की पहचान है और सरकार मेले को भव्य रूप देने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। जिला कलेक्टर गौरव गोयल ने उन सभी अफवाहों को सिरे से खारिज किया जिसमें मेला क्षेत्र पर अतिक्रमण की संभावना बताई जा रही थी। उन्होंने कहा कि मेला भूमि को पूरी तरह संरक्षित

रखने के लिये और अधिक पुख्ता इंतजामात किये जायेंगे। गोयल ने कहा कि अगले मेले तक मेला क्षेत्र में मेला पाथ-वे विकसित किया जायेगा।

मेला मैदान के पास ही प्रशासन एवं पुलिस के कैम्प स्थापित किए गए हैं। मेला अवधि में तीर्थ यात्रियों एवं पर्यटकों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया



■ फुटबाल मैच में देशी खिलाड़ियों ने पर्यटकों को हराया
■ पर्यटकों की सुरक्षा के लिए पर्याप्त पुलिसकर्मी तैनात

है। धार्मिक अनुष्ठान पूर्ण करने के लिए प्रशासन द्वारा मेला क्षेत्र एवं सरोवर पर विशेष व्यवस्थाएँ की गई हैं। पुष्कर मेले में लुत्फ उठाने के लिए हजारों विदेशी पर्यटक भी पहुंच चुके हैं। इस दौरान पुष्कर पालिका के उपाध्यक्ष मुकेश कुमावत, मंडल अध्यक्ष पी एन भाटी, भाजपा महिला भाजपा अध्यक्ष लक्ष्मी पाराशर, पार्षद महेश पाराशर, जयनारायण दागदी, घनश्याम भाटी, शंकर चौहान, मदन सिंह रावत सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।

कलेक्टर गोयल ने बताया कि 28 अक्टूबर से प्रारंभ होने वाले पुष्कर मेले के दौरान दूसरी बार हारमोनी मेराथन का आयोजन 3 नवम्बर को सुबह 6 बजे किया जायेगा। इस बार भी यह मेराथन दरगाह ख्वाजा साहब की दरगाह से प्रारंभ होकर ब्रह्मा मंदिर तक जायेगी जो मेला मैदान पुष्कर में संपन्न होगी।

डेंगू में प्लेटलेट्स की कमी से नहीं होती मौत : एस के गोयल

मरीज को ओआरएस, जिंक युक्त ग्लूकोज, फोलिक एसिड, दें

कोटा, (निस्)। शहर में डेंगू से हो रही लगातार मौतों पर रोकथाम व मंथन के लिए जिला प्रशासन, व स्वयंसेवी संगठनों की एक संयुक्त कार्यशाला शनिवार को आईएमए हॉल में आयोजित की गई। कार्यशाला का मकसद जनमानस में डेंगू की रोकथाम एवं जनागारुकता के प्रयासों को मजबूती देना था।

कार्यशाला में डॉ. एसके गोयल ने बताया कि दैनिक्याभर में डेंगू 50 गुना बढ़ गया है। इससे बचाव ही अधिक कारगर है जिसकी शुरुआत घरों से करनी होगी। यह एडीज वायरस है। डॉ. गोयल के अनुसार प्लेटलेट्स की कमी से सामान्यतः मरीज की मौत नहीं होती है। मरीज को प्लेटलेट्स बढ़ाने के



बजाय उसके रक्तचाप की निरन्तर जांच करनी चाहिए। मरीज एक से 14 दिन तक प्रभावित रहता है। उन्होंने सुझाव दिया कि मरीज को कम से कम दवाएं देनी चाहिए तथा दिन भर में 3 से 4 लीटर पानी एवं प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए ओआरएस, जिंक युक्त ग्लूकोज व प्राकृतिक तरीके अपनाने चाहिए। उन्होंने दवाओं में फोलिक एसिड,



प्रभाव नहीं पड़े। डॉ. एसडी शर्मा ने बताया कि डेंगू की चार स्टेज के बारे में बताया। डॉ. मनोज सलूजा ने बताया कि डेंगू में घर के अन्दर स्प्रे अधिक कारगर होता है इससे 6 माह तक मच्छर नहीं पनपता है। उन्होंने बताया कि विश्व के 14 देशों में डेंगू का टीका उपयोग लिया जा रहा है। दक्षिणी एशियाई देशों में डेंगू अधिक भयावह स्थिति में है। कार्यशाला में सुझाव आये कि एक बार डेंगू से पीड़ित मरीज को साधारण मच्छर के काटने पर वह भी डेंगू मच्छर हो जाता है, ऐसे में शेष परिवर्तनों को मच्छरदानी या लोशन का इस्तेमाल करना चाहिए। फोर्गिंग के समय घरों के दरवाजे एवं खिड़कियां बन्द कर लेनी चाहिए।

विटामिन बी-12, एवं पैरासिटामोल देने का सुझाव दिया ताकि विपरीत

मरीज के रक्तचाप की निरन्तर जांच करनी चाहिए

■ विश्व के 14 देशों में डेंगू के टीके का हो रहा उपयोग

■ द. एशियाई देशों में डेंगू की स्थिति भयावह

ज़नवाणी

देशव्यापी अभियान चलाया जाना बेहद जरूरी

सड़क व परिवहन मंत्रालय ने 2016 की सड़क दुर्घटनाओं के जो आंकड़े दिए हैं वे चौंकाने वाले हैं। हमारे देश में जिस तीव्र गति से वाहन बढ़ते जा रहे हैं उसकी तुलना में चालकों की सावधानी नहीं बढ़ाई जा रही है। ट्रेफिक पुलिस अपना दायित्व ठीक तरह नहीं निभा पा रही है जिससे सरेआम ट्रेफिक नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

अशिक्षित व अल्प व्यक्त भी घडल्ले से गाड़ियां दौड़ा रहे हैं। मदिरापान करके गाड़ी चलाना तो हमारे देश में शान की बात समझी जाती है। हमें पश्चिमी देशों से शिक्षा लेनी चाहिए। ट्रेफिक नियम तोड़ने वाला ड्राइवर जानता है कि पुलिस का हवलदार मिल भी गया तो ले-देकर मामला निपटा दिया जायेगा। यही सोच दुर्घटनाओं को आमंत्रण दे रही है।

अतः हर देशवासी को इन दुर्घटनाओं की खबर को गंभीरता से लेना होगा तभी रोज-रोज होती अकाल मौतों पर नकेल कसी जा सकती है। बेतहाशा बढ़ रहे वाहनों पर भी लगातार लगनी चाहिए। जल्द से जल्द इस पर देशव्यापी अभियान चलना चाहिए, जिससे कि परिवार/समाज में जिंदगी भर का खौफ ना रहे।

-प्रकाश कीर्तनिया, रामगढ़ शेखावाटी (राज.)

राशिफल



पंडित अनिल शर्मा

रविवार 29 अक्टूबर, 2017

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2074, धनिष्ठा नक्षत्र, वृद्धि योग, तैलिल करण, चन्द्रमा आज सायं 5:39 पर कुंभ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कन्या, बुध-तुला, गुरु-तुला, शुक्र-कन्या, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतु-मकर राशि में। धनिष्ठा नक्षत्र सोमवार प्रातः 6:44 तक, गंड योग रात्रि 8:03 तक है। इसके पश्चात शतभिषा नक्षत्र, वृद्धि योग, गर करण आरम्भ होगा। रविवेग आज सायं 5:39 दिन-रात रहेगा। महापात योग दिन 3:10 से रात्रि 10:25 तक है। बुध उदय पश्चिम रात्रि 10:05 पर होगा। आज आंबला नवमी, अक्षय कुम्भाद नवमी, श्रीहरि जयन्ती है। पंचक सायं 5:19 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 8:01 से 9:24 तक, लाभ-अमृत 9:24 से 12:31 तक, शुभ 1:34 से 2:57 तक। राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक।

कार्टूनी नज़रिया



दक्कन क्रॉनिकल से साभार

मेघ

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी।

सिंह

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति में सुधार होगा।

धनु

घर-परिवार में सुसंदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिचितों के सहयोग से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

वृष

धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यवसायिक प्रयासों में सार्थक सफलता मिल सकती है। सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

मकर

नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। नवीन योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी नहीं रहेगी।

मिथुन

यात्रा टालना ठीक रहेगा। मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं।

तुला

घर-गृहस्थी की समस्याओं के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। परिवार में आपसी अनबन बढ़ सकती है।

कर्क

घर/परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। सूर्यास्त पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मीन

अनगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यक्तिगत व्यावसायिक कार्यों से मानसिक तनाव बना रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।